भारत कला भवन

भारत कला भवन, संग्रहालय भारतीय कला एवं पुरातत्व सामाग्री का एक अनूठा संग्रहालय है जो काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से सन् १९५० से सम्बद्ध है। काशी नागरी प्रचारिणी सभा के एक अंग के रूप में 'भारतीय कला परिषद्' नाम से १ जनवरी सन् १९२० को इस संग्रहालय की स्थापना हुई। कविन्द्र रविन्द्र नाथ टैगोर इसके प्रथम सभापति थे। वस्तुतः इस संग्रहालय का जन्म एवं विकास पद्मविभूषण राय कृष्णदास की कल्पना का मूर्त रूप है जो इसके आजीवन अवैतनिक निदेशक रहे। सन् १९२८ में 'भारतीय कला परिषद्' के स्थान पर इसका नाम परिवर्तित कर 'भारत कला भवन' रखा गया। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय स्थित वर्तमान भवन का शिलान्यास १७ जुलाई सन् १९५० को तथा उद्घाटन १३ जनवरी सन् १९६२ ई को भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू ने किया।

शैशवास्था से ही भारत कला भवन दुर्लभ, सुन्दर, और कलात्मक वस्तुओं का संग्रहकर्त्ता रहा है। इस संग्रहालय में लगभग १ लाख से भी अधिक कलाकृतियाँ संग्रहित हैं जिसमें प्रस्तर मूर्तियाँ, सिक्के, चित्र, वसन, मृण्मूर्तियां, मनके, शाही फरमान, आभूषण, हाथी दांत की कृतियाँ, धातु की वस्तुएँ, नक्कासी युक्त काष्ठ, मुद्राएँ, प्रागऐतिहासिक उपकरण, मृदभाण्ड, अस्त्र-शस्त्र, साहित्यिक सामाग्री इत्यादि हैं तथा निर्धारित १३ वीथिकाओं में इसे प्रदर्शित किया गया है। प्रसिद्ध विद्वान डॉ० ओ.पी. केजरीवाल के अनुदान से महान संग्राहक फ्रेड पिन के संग्रहों की एक वीथिका भी यहाँ है। यह संग्रहालय अपने दुर्लभ, अद्वितीय तथा उत्कृष्ट चित्रों के संग्रह के लिए भी विश्वविख्यात है। यहाँ ताड़पत्र, कागज, कपड़ा, काष्ठ, चर्म, हाथी दांत, सीसा तथा अभ्रक चित्रित लगभग १२ हजार चित्रों का संग्रह है।

यह संग्रहालय एशिया के विश्वविद्यालयीय संग्रहालयों में उत्तम कोटि का है। छात्र, शोधार्थी, शिक्षक एवं अध्ययनार्थी अपने उच्च शिक्षा एवं अनुसंधान के लिए पुस्तकालय में कला तथा पुरातात्विक संदर्भ की जानकारी एवं परामर्श के लिए प्रतिदिन आते हैं। इसके अतिरिक्त भारत कला भवन में कला एवं पुरातनता के उचित देखरेख और जीर्णोद्धार के लिए एक संरक्षण प्रयोगशाला है। मात्र इसी संग्रहालय में छायाचित्र अनुभाग है जो अध्ययनार्थियों के उनके वांछित पुरातनता के जरूरी सन्दर्भ एवं आगामी शोध के लिए छायाचित्र एवं डिजीटल छायाचित्र प्रदान करती हैं, इसके साथ ही संग्रहालय में पारम्परिक मुगल एवं आरेखी कला के दो कलाकार हैं जो आगन्तुकों एवं जनता में इन कला वस्तुओं की जागरूकता बढ़ाने में संलग्न हैं।

वर्तमान समय में पुस्तकालय में लगभग २४५४१ पुस्तकें तथा ६२३० पत्रिकाएँ संकलित हैं।

नवीन वीथिका का निर्माण : १. निकोलस रोरिक वीथिका, २.मालवीय वीथिका, ३.साहित्य वीथिका, ४.विज्ञान उपकरण एवं ताम्र मूर्ति वीथिका।

प्रशिक्षण कोर्स में सहभागिता-

१. विक्टोरिया एण्ड अलबर्ट म्यूजियम तथा बंगाल क्लब, कोलकाता द्वारा आयोजित म्यूजियम मास्टर ट्रेनिंग कोर्स में संस्थान के तीन संग्रहालयकर्मियों, डॉ. राधाकृष्ण गणेशन, श्री विनोद कुमार एवं डॉ. डी. बी. सिंह ने सहभागिता कर प्रशिक्षण प्राप्त किया।
२. भारत कला भवन पुस्तकालय के सदस्यों डॉ० अरूपा मजुमदार एवं श्री विश्वम्भर पाठक ने केन्द्रीय ग्रन्थागार, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित 'सोल' साफ्टवेयर कार्यशाला में सहभागिता की।

संग्रहालय शैक्षणिक गतिविधियां :

शैक्षणिक गतिविधियों के अन्तर्गत भारत कला भवन में नियमित एवं गंभीर विद्यार्थी दर्शकों में जागरूकता उत्पन्न करने हेतु विविध प्रकार के शैक्षणिक क्रियाकलाप होते रहते हैं। गोष्ठियों, अस्थायी प्रदर्शनियों, कार्यशालाओं, प्रतियोगिताओं

आदि के माध्यम से संग्रहालय यहां संग्रहीत विविध प्रकृति के दुर्लभ धरोहरों के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने हेतु प्रयासरत रहता है जिससे दर्शक इस मूल्यवान राष्ट्रीय संपदा एवं उसके महत्व को समझ सके। संग्रहालय अवलोकनार्थ आये दर्शकों को दी जाने वाली भ्रमण सुविधाएं इस प्रकार हैः-

१. सनबीम स्कूल वाराणसी के छात्र/छात्राओं के भ्रमणार्थ गाइड सुविधा उपलब्ध करायी गयी।
२. इण्डियन पब्लिक स्कूल के छात्र/छात्राओं के भ्रमणार्थ गाइड सुविधा प्रदान की गयी।
३. बाबा राघव दास डिग्री कॉलेज, गोरखपुर से आए विद्यार्थी समूह को प्रदर्शित वस्तुओं के अवलोकनार्थ गाइड सुविधा दी गयी।